जहाँगीर एवं शाहजहाँ की धार्मिक नीति

जहाँगीर को विरासत में अकबर की उदार धार्मिक नीति मिली थी, जिसे काफी हद तक बनाये रखने का प्रयास किया। वह अपने विचारों में भी उदार था तथा सूफी परम्परा एवं वेदान्तिक विचार धारा से काफी प्रभावित था। कहा जाता है कि उसके धार्मिक विचारों पर वेदान्तिक संत अबदरूप गोसाई एवं कादरी सिलसिले के सूफी संत मियां मीर के विचारों का काफी प्रभाव था। यही कारण है कि वह अपने पिता की धार्मिक नीति से दूर नहीं जा सका।

जहाँगीर अपने शासन काल में अकबर के सुलह-ए-कुल की नीति को जारी रखा। हिन्दू पर्व त्योहार जैसे होली, दीपावली, शिवरात्रि, दशहरा आदि पहले की तरह इस काल में भी मनाये जाते रहे। नौरोज (पारसी नव वर्ष) का त्योहार भी मनाया जाता था तथा हिन्दुओं एवं ईसाईयों आदि को अपने-अपने धर्म के अनुसार आचरण करने की पूरी छूट थी। यहाँ तक कि उन्हें मंदिर चर्च आदि बनाने की भी छूट थी। ईसाईयों को तो धर्मान्तरण की भी छूट थी। जहाँगीर ने 1610 ई. में दानियाल के बेटे का बपतिस्मा (ईसाई धर्म में दीक्षित होना) भी करवाया था। उसने पंजाब एवं गुजरात में गौ हत्या पर रोक लगाया था। इसी तरह उसने वृहस्पतिवार एवं शनिवार दोनों दिन जीव हत्या को प्रतिबन्धित किया था तथा बलात् धर्मान्तरण पर भी रोक लगाया था। इस तरह हम देखते हैं कि जहाँगीर के काल में धार्मिक वातारण लगभग पूर्ववत रही तथा उसकी धार्मिक नीति भी अकबर जैसी रही।

किंतु साथ ही साथ यह भी ध्यातव्य है कि उसके

शासनकाल में धार्मिक नीति में कुछ चूक भी हुई जो उसके उदारवादी चरित्र के प्रतिकूल थे जैसे मेवाड़ के विरुद्ध युद्ध को जेहाद का नाम देना, आक्रमण के दौरान मंदिरों को तोड़ाजाना, 1614 ई के कांगड़ा अभियान को जेहाद का नाम देना, 1617 ई में गुजरात के जैन मंदिर को बंद करने का आदेश देना, पुष्कर के वराह मूर्ति को तोड़वाना आदि। गुरु अर्जुनदेव (की मृत्युदंड) के साथ किये गये उसके व्यवहार को भी इसी संदर्भ में देखा जा सकता है। किंतु यह उल्लेखनीय है कि इनमें से कईयों के कारण गैर धार्मिक यानि राजनीतिक थी। अर्जुनदेव एवं जैनियों के निष्कासन के मामले गैर धार्मिक थे। केवल वराह की प्रतिमा नष्ट करवाना ही धार्मिक था जो अपवाद था।

इस तरह कहा जा सकता है कि जहाँगीर के काल में राज्य का उदारवादी चरित्र पूर्ववत कायम रहा एवं धार्मिक नीति भी उदारवादी रही हालाँकि यदा कदा कुछ कारणों से छोटी मोटी गलतियाँ हुई। इस संदर्भ में यह भी उल्लेखनीय है कि यह वह दौर था जब अकबर के उदारवादी नीतियों के विरुद्ध रूढ़िवादियों की प्रतिक्रिया हो रही थी। जिसने जहाँगीर पर धार्मिक नीति को पुनर्रीक्षित करने तथा इस्लाम के प्रति अधिक रुचि दिखाने के लिये दबाव डाला। फिर भी उसने न तो दूसरे धर्मों के उत्पीडन को बढ़ावा दिया और न ही अकबर के काल में हिन्दुओं को जो स्थान एवं प्रतिष्ठा मिली थी उसमें कोई कटौती की। तभी तो उसके संदर्भ में यह उक्ति प्रसिद्ध है कि वह अपने पिता से ज्यादा एवं पुत्र खुर्रम से कम कट्टर था।

-o-

शाहजहाँ

शाहजहाँ अपने व्यक्तित्व एवं विचार में अपेक्षाकृत रूढ़िवादी था तथा इस्लामी परम्पराओं के पुनरुत्थान में रुचि रखता था। यद्यपि वह भी कादरी सूफी विचारों में रुचि रखता था किंतु सामान्यतः उसमें धार्मिक उदारता का अभाव था। यही वजह है कि उसके शासन काल में शरा को वरीयता दिया गया तथा राज्य के चरित्र को थोड़ा बहुत इस्लाम की ओर झुकाने का प्रयास किया गया।

इस काल में हिन्दुओं से वैवाहिक रिश्तों की स्थापना बंद कर दी गई। जर्मीनबोस एवं सिजदा की जगह चयार-ए-तस्लीम की परम्परा आरंभ की गई। पगड़ी में बाद-शाह के तस्वीर पहनने की परम्परा को भी गैर-इस्लामी मानते हुये बंद कर दिया गया। स्पष्टतः ये सारे कदम राज्य के इस्लामी चरित्र पर बल देने से सम्बन्धित थे।

परंतु आगे चलकर उसने कुछ ऐसे कदम भी उठाये जो गैर मुस्लिमों के प्रति भेदभावमूलक थे जैसे नये मंदिरों के निर्माण पर रोक एवं नवीनतम बने मंदिरों को गिराना, मुस्लिम लड़कियों के हिन्दू लड़कों से विवाह करने पर रोक, कब्रिस्तान के पास श्मशान बनाने पर रोक, मुसलमानों की तरह कपड़ा पहनने पर रोक तथा मुस्लिम युद्धबंदियों के खरीद पर रोक आदि। यही सब राज्य के चरित्र में परिवर्तन के द्योतक है।

इस तरह स्पष्ट होता है कि शाहजहाँ काल में अकबर एवं जहाँगीर की धार्मिक नीति में कुछ बदलाव किये गये तथा राज्य के इस्लामिक चरित्र पर थोड़ा बल दिया गया। फिर भी इसका प्रभाव अभी सीमित क्षेत्र में ही था एवं मोटे तौर पर राज्य के बुनियादी ढाँचे में कोई खास बदलाव नहीं आये।

P-3